भूमिका—

भारतीय इतिहास में मध्यकाल का समय व्यापक स्तर पर परिवर्तन का समय रहा है। एक ऐसा समय जब समाज राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सभी स्थिति में चिन्तनशील रहा था। मध्यकाल में मुगलों के आक्रमण के बाद भारत में नई सत्ता स्थापित होने के कारण यहां की कला संस्कृति भी बहुत प्रभावित हुई और यह परिवर्तन नाट्य कला में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है। इस समय नाटक को राजाश्रय मिलना समाप्त हो गया नाटक राजमहल से निकल कर बाहर आमजनता के बीच अपना स्थान बना रहा था। चूंकि उस समय नाटकों की भाषा संस्कृत हुआ करती थी और आमजनता को इस भाषा की जानकारी नहीं होने के कारण सम्पूर्ण भारत के नाट्य कला में यह परिवर्तन देखने को मिलता है। मध्यकाल में नाट्यकला में जो परिवर्तन देखने को मिलत है, वह है क्षेत्रीय मिश्रित भाषाशैली का विकास। इस शैली में नाटक में संस्कृत तथा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग के साथ नाटक में गीत, संगीत तथा नृत्य की प्रधानता देखने को मिलती है, चूंकि मेरे प्रस्तावित शोध का विषय है ‘‘**मध्यकालीन भाषा नाटक की सांगीतिक पद्धति- ‘अंकिया-नाट और किरतनियां’ के विशेष सन्दर्भ में**’’ तो उदहारण मैं किरतनियाँ और अंकिया का ही देना चाहूंगी। यह परिवर्तन बिहार के किरतनियाँ और अंकिया-नाट में भी देखने को मिलता है। किरतनियाँ नाट्य का जन्म बिहार के मिथिला में तथा अंकिया-नाट का जन्म असम, असमियां लोक नाट्य परंपरा में हुआ है। इसे विद्वानों ने भाषा नाटक का नाम दिया।

भाषा नाटक का विकास मध्यकाल में लगभग 10वीं शताब्दी तक हो चुका था। मध्यकाल का यह एक नया प्रयोग था, जो संस्कृत नाटकों में किया गया। जिसका उदेश्य था आम जनता के बीच नाटक की लोकप्रियता को बढ़ाना क्योंकि नाटक ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनोरंजन के

साथ-साथ आसानी से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आदि समस्याओं से हर वर्ग को अवगत कराया जा सकता था। चूंकि मध्यकाल तक आते-आते देश में अन्य शासकों के आक्रमण तथा नई सत्ता (मुगलों राज्य) स्थापित होने के कारण संस्कृत नाटक ह्रासोन्मुखी हो रहा था।

आम जनता के बीच अनेक प्रकार के नाट्य-प्रदर्शन प्राचीन काल से और संस्कृत-नाट्य के विकास काल में भी होते रहे थे। अत: रामलीला, रासलीला, अंकिया नाट, जात्रा, भागवतमेला, सांग इत्यादि मध्यकालीन लोकप्रिय शैलियों का उद्भव और संस्कृत नाट्य के ह्रासकाल में एक ऐसी नृत्य-संगीत-संवाद और मिश्रित शैली से हुआ। जिसका लक्षणकारों ने तो उल्लेख नहीं किया है, लेकिन जिसके लिए नाटककरों एवं अन्य लेखकों ने 'संगीतक' शब्द का व्यवहार किया।

उमापति ठाकुर और कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर जो हरसिंहदेव के राजदरबार की दो विभूतियां थे। इन्होंने अपने संरक्षक के आदेश पर उत्तरी भारत में सर्वप्रथम गीतगोविन्द को आधार मानकर भाषा संगीतक की रचना की। उमापति ठाकुर का 'पारिजातहरण नाटक' और ज्योतिरीश्वर ठाकुर का 'धूर्त्तसमागम' यह दोनों कृतियाँ मध्यकालीन भाषा नाटक के इतिहास में युगांतरकारी प्रयोग थे।

भाषा नाट्य के विकास में मध्यकालीन शासकों और राजदरबारी कलाकारों का भी बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें केरल के कुलशेखरवर्मन, मिथिला- नरेश के हरसिंहदेव, असम के शंकरदेव, ब्रज के नारायण भट्ट, बंग के रुपगोस्वामिन, आन्ध्र के सिद्धेन्द्रयोगी और तंजोर के रघुनाथ नायक भाषा-नाट्य के मुख्य प्रवर्त्तक माने जाते हैं।

प्रस्तुत शोध ''**मध्यकालीन भाषा नाटक की सांगीतिक पद्धति- 'अंकिया-नाट और किरतनियां' के विशेष सन्दर्भ में**'' में अंकिया-नाट और किरतनियां की सांगीतिक पद्धति के

विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। जिसमें सम्पूर्ण शोध को चार भागों में बांटा गया है, जो निम्नलिखित है—

अध्याय- 1

मध्यकालीन भाषा नाटक की परंपरा और विशेषता :-

इस अध्याय में भाषा नाटक का विकास, परंपरा, विभिन्न विद्वानों तथा नाटककारों का योगदान एवं नाट्य संगीत की अवधारणा तथा स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया है।

अध्याय – 2

किरतनियां नाट्य का उद्भव, विकास और स्वरूप :-

प्रस्तुत अध्याय में बिहार के किरतनियाँ नाट्य का संक्षिप्त इतिहास तथा रंजन प्रधान सांगीतिक पद्धति का अध्ययन किया गया है।

अध्याय- 3

अंकिया नाट का उद्भव, विकास और स्वरूप:-

इस अध्याय में असम के अंकिया-नाट का संक्षिप्त इतिहास तथा रंजन प्रधान सांगीतिक पद्धति का अध्ययन किया गया है।

अध्याय- 4

किरतनियां और अंकिया-नाट की सांगीतिक पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन:-

प्रस्तुत अध्याय में किरतनियां और अंकिया-नाट की सांगीतिक पद्धति की तुलना नाटक में प्रयुक्त गीतों, रागों, तालों की समानता और भिन्नता तथा सम्पूर्ण रागों तथा तालों का विशेष अध्ययन के द्वारा किया गया है।